प्रातःक्लास ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?" 2-2-68

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों साथ रूह-रूहान कर रहे हैं। यह तो सभी आत्मायें जानती है कि एक ही हमारा बाप और शिक्षा भी देते हैं। टीचर का काम है शिक्षा देना। गुरु का काम है मंजिल बताना। मंजिल को तो बच्चे समझ गये हैं। मुक्ति-जीवन्मुक्ति के लिए याद की यात्रा बहुत जरूरी है। और रचना के आदि, मध्य अन्त को भी जानना जरूरी है। है दोनों सहज। 84 जन्मों का चक्र भी फिरता रहता है। यह याद रहना चाहिए अभी हमारा 84 का चक्र पूरा हुआ है अब वापस जाना है। परन्तु आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाये न सकें। जब तक कि पावन न बनें। ऐसे2 अपने साथ विचार सागर मथन करना है। जो करेंगे वही पावेंगे। खुशी में भी वही आवेंगे और दूसरों को भी खुशी में ले आवेंगे। औरों पर भी कृपा करनी है रास्ता बताने की। तुम बच्चे जानते हो यह पुरुषोत्तम संगम युग है। यह भी कोई को याद रहता है कोई को नहीं। भूल जाते हैं। यह भी याद रहे तभी भी खुशी का पारा चढ़े। बाबा टीचर, सद्गुरु के रूप में याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़े। परन्तु चलते चलते बीच में रोला पड़ जाता है। किसको थोड़ा किसको बहुत। पड़ता जरूर है। पहाड़ों पर नीचे-ऊपर जाना होता है ना। बच्चों की अवस्था भी ऐसे होती है। कोई बहुत ऊंचे चढ़ते हैं, फिर गिरते हैं तो आगे से भी जास्ती नीचे गिर पड़ते हैं। की हुई कमाई चट हो जाती है। भल कितना भी दान-पुण्य करते हैं तो पुण्यात्मा बनें। वह पुण्य करते2 फिर पाप करने लग पड़ते हैं तो वह पुण्य भी खत्म हो जाता है। सब से बड़ा पुण्य तो यह है बाप को याद करना। याद से ही पुण्यात्मा बनेंगे। अगर भूल ही भूल जाये, दूसरों का संग लग जाये तो पाप करने से वह पुण्य भी खत्म हो जाता। ऐसे नहीं पुण्य जो किया है सो जमा रहेगा। नहीं। पाप करने से फिर वह पुण्य भी स्वयुएल हो जाता है। इससे कमती भी हो जाता। समझो कल दान-पुण्य करते, सेन्टर खोलते, कल फिर बेमुख हो जाते हैं तो आगे से भी जास्ती नीचे गिर जाते। फिर वह खाता जमा रहेगा नहीं। घाटा हो जावेगा। पाप का काम करने से घाटा होता जावेगा। बहुत पाप खाते चढ़ जाते हैं। बुरादी सम्भाली जाती है ना। बाप कहेंगे तुम्हारा खाता पुण्य का था फिर पाप करने से सैणा हो जाता है। बाकी क्या रहा। और ही खाते में पड़ जावेगा। पाप कोई बहुत कड़ा, कोई हल्का होता है। काम है बहुत कड़ा। क्रोध सेकन्ड ग्रेड, लोभ इन से कम, मोह फिर इन से कम। सब से जास्ती काम के बस होने से जो जमा हुआ वह भी नाश हो जाता। फायदे बदली और ही नुकसान हुआ। सद्गुरु के निन्दक ठौर न पायें। बाप का बन कर फिर छोड़ देते हैं, कारण क्या हुआ? असर कर के काम की चोट लगती है। यह हैं कड़ा दुश्मन। इनको ही एफ.जी. बनाते हैं। क्रोध वालों को भी एफ.जी. नहीं बनावेंगे। इसी काम पर ही पूरी जीत पानी है। काम पर जीत पाई तो जगत जीत बन जायेंगे। ऐसे नहीं कि क्रोध लोभ पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। मुख्य बात काम की ही है। बुलाते भी हैं हम जो रावण राज्य में पतित बने हैं अब पावन बनाओ। मनुष्यों को इन से कितनी प्रीत होती है। बाप कहते हैं काला मुंह किया तो कुल का कलंक लगाया। क्रोध, लोभ के लिए ऐसे कड़ अक्षर कब नहीं कहेंगे। सारा काम पर है। पतित ही बाप को बुलाते हैं। विकार में जाने वालों को ही पतित कहा जाता है। गाते तो सभी हैं पतित पावन... हे पतितों को पावन बनाने वाले सभी सीताओं के राम आओ। यह अर्थ समझते नहीं हैं। यह भी समझते हैं बाप जरूर नई दुनिया ही स्थापन करने आवेंगे। परन्तु बहुत टाईम देने घोर-अंधियारे में हो गये ज्ञान और अज्ञान हैं ना। अज्ञान है भक्ति। जिसकी पूजा करते हैं उनको जानते ही नहीं। तो उनके पास पहुंचें कैसे। इसलिए दान-पुण्य आदि सब निष्फल हो जाता है। कर के कुछ मिलता भी है तो अल्प काल, काग विष्टा समान सुख मिलता है। बाकी तो दुःख ही दुःख है। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। अब देखना है हम कितना याद करते हैं। जो पुराना खत्म हो नया जमा हो। कोई तो कुछ भी जमा नहीं करते। यह सारी याद की बात है। याद बिगर पाप कैसे मिटे। पवित्र कैसे बनें। ऐसे भी नहीं इस जन्म में याद करते हैं तो पाप भस्म हो जावेंगे। नहीं। पाप तो बहुत हैं जन्म-जन्मान्तर के। इस जन्म के

जीवनकहानीसुनाने से कोईजन्म-जन्मान्तर के पापथोड़े ही कट जावेंगा। सिर्फ इस जन्म की हत्काई होती है। बाकी तो बहुत मेहनत करनी पड़ें। इतने जन्मों का हिसाब-किताब ईकट्ठा हुआ है। वह योगबल से चुकुत करना है विचार करना चाहिए हमारा योगबल कितना है। हमारा जन्म सतयुग आदि में हो सकेंगा। जो बहुत पुरुषार्थ करते हैं वही सतयुग के आदि में जन्म ले सकेंगे। वह छीपे नहीं रहेंगे। सभी तो समझ सके हम सतयुग आदि में आवेंगे। नहीं। पिछाड़ी में जाकर थोड़ा पद पाते हैं। अगर पहले आते भी हैं तो नौकरी करते हैं। यह तो कामन बात है। समझने की। इसलिए बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। तुम बच्चे समझते हो हम यह विश्व के मालिक बनने आये हैं। जो याद करेंगे उनको खुशी जरूर रहेंगी। जितना याद की यात्रा में रहेंगे। राजा बनना है तो प्रजा भी बनानी पड़ें। नहीं तो कैसे समझेंगे कि हम राजा बनेंगे। जो सेन्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं उनकी भी तो कमाई होती है ना। इन में भी बहुतों को फायदा मिलता है। तो उसका फल मिल जाता है। कोई तीन-चार सेन्टर खोलते हैं, दिल में रहता है ना इसने सेन्टर खोली है। बाबा को लिस्ट निकाल दो कि किस2 ने डायरेक्ट सेन्टर खोला है। बाबा भी सेन्टर खोलते हैं ना। जो2 करते हैं उनका हिस्सा तो आता है ना। मिल कर माता के दुःख का छप्पर उठाते हो। तो इसमें कुछ सब देते हैं। सब को मिलता तो है ना। जो बहुतों को रास्ता बताते हैं, जितना मेहनत करते हैं तो वह ऊंच पद भी पाते हैं। उनको खुशी भी बहुत होगी। दिल जानते हैं हम कितने को समझाया। कितने का उधार किया। सब कुछ करने का वह समय तो यही है। खान-पान भी तो सब को ठीक मिलता ही है। कोई तो कुछ भी काम नहीं करते हैं ऐसे ही चलते रहते हैं। कोई भल कुछ भी नहीं देते हैं परन्तु सर्विस बहुत अच्छी करते हैं। जैसे मम्मा कितनी सर्विस की। सर्विस से ही उनका बहुत कल्याण हो गया। इसमें भी सर्विस डबल चाहिए। योग की भी सर्विस है ना। कितनी डबल डायरेक्शन मिलती रहती है। आगे बाबा बिन्दी-बिन्दी थोड़े ही कहते थे। अभी तो आगे चल पता नहीं क्या2 पाईन्ट्स निकलेंगे। दिन प्रति दिन उन्नति होती जावेंगी। नये2 पाईन्ट्स निकलते रहेंगे। जो सर्विस में तत्पर रहते हैं वह झट पकड़ लेते हैं। जो सर्विस ही नहीं करते तो उनकी बुधि में कुछ बैठेगा नहीं। बिन्दी कैसे समझूं, बिन्दी2 करते2 ही प्राण निकल जावेंगे। तुम कोई से भी पूछो आत्मा कितनी बड़ी है? आत्मा का नाम, रूप, देश-काल बताओ? कब नहीं बता सकेंगे। मनुष्य परमात्मा का नाम-रूप, देश-काल पूछते हैं, तुम आत्मा का उन से पूछो तो भी भूल जावेंगे। किसको भी यह थोड़े ही पता है आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है उन में इतना सारा पार्ट भरा हुआ है। यहां भी बहुत हैं जो आत्मा, परमात्मा को बिलकुल ही नहीं जानते। ऐसे ही बाबा के पास आकर पड़े हैं। जैसे अवधूत होते हैं ना। कुछ भी समझते नहीं। बाकी विकार से छूटे, सन्यास धारण किया है यह भी कमाल है। सन्यासियों का तो धर्म ही अलग है। यह ज्ञान तुम्हारे लिए ही है। बाप समझाते हैं तुम पवित्र थे अब अपवित्र बने हो। फिर पवित्र बनना है। तुम्हारे ही 84 जन्म हैं। कैसे चक्र लगाते हो यह बुधि तुमको मिली है। दुनिया में तो जरा भी इन बातों को नहीं जानते। ज्ञान बिलकुल अलग है। भक्ति अलग है। "ज्ञान चढ़ाते हैं भक्ति गिराते हैं। तो रात-दिन का फर्क हो गया ना। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। भल कितना भी वेदों-शास्त्रों की अथॉरिटी अपन को समझते हैं परन्तु जरा भी पता नहीं है भक्ति क्या है, ज्ञान क्या है। तुमको भी अभी मालूम पड़ा है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। भूलने कारण ही खुशी कम हो जाती है। नहीं तो अथाह खुशी रहनी चाहिए। बाप से हमको यह वर्सा मिल रहा है। बाप सा० कराये देते हैं। सा० किया, परन्तु श्रीमत पर न चले तो फायदा ही क्या। बाप को कहते भी हैं रहम करो, लिबरेट करो। दुःख में ही सिमरण करेंगे। हे प्रभु, हे राम। परन्तु प्रभु कौन है यह भी नहीं जानते। तुम तो अच्छी रीत जानते हो। भक्ति मार्ग में ऐसे कोई थोड़े ही कहेंगे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बिलकुल नहीं। अगर कहते हों तो परम्परा चला आये। भक्ति तो चली आती है ना। अथाह भक्ति है। ज्ञान तो है ही एक। भक्ति किसम2 के ढेर हैं। मनुष्य समझते हैं भक्ति से भगवान मिलेगा।

कैसे कब मिलेगा कुछ भी पता नहीं। भक्ति कब से शुरू होती है, कौन जास्ती भक्ति करते हैं यह भी कोई को पता नहीं। क्या इतना 40 हज़ार वर्ष ही भक्ति करते रहेंगे। मनुष्य कितना अंधियारे में हैं। अब एक तरफ भक्ति हो रही है। दूसरे तरफ तुम ज्ञान पाये रहे हो। मनुष्यों से कितना माथा मारना पड़ता है। इतने प्रदर्शनी, म्यूजियम आदि करते होफिर भी कोटो में कोऊ ही निकलते हैं। कितने को आपसमान बना कर भी ले आते हो। बच्चा कहे तो भी सच्चे2 ब्राह्मण कितने हैं, परन्तु वह हिसाब अभी निकाल नहीं सकते हैं। बहुत झूठे भी हैं। ब्राह्मण लोग लोग कथा सुनाते हैं। बाबा गीता की कथा सुनाते हैं। तुम भी सुनाते हो। कथा बाबा तथा बच्चे। बच्चों का भी काम है सच्ची2 गीता सुनाना। शास्त्र तो सब के हैं। वास्तव में जो भी शास्त्र वाईबल आदि आदि हैं वह सभी हैं भक्ति-मार्ग के। ज्ञान का पुस्तक तो एक ही गीता है। गीता माई-बाप है। बाप ही आकर सब की सद्गति करते हैं। यह भी तुम लिख सकते हो सद्गति करने वाला एक ही बाप है। बाकी सभी हैं दुर्गति करने वाले। तुम बाप की ही बड़ाई करते हो। शिवबाबा की जयन्ति ही हीरे जैसा है। बाकी सभी जयन्तियां हैं कौड़ी मिसल। कहेंगे न नेहरू के इतना बनाते हैं। यह तो कुछ भी नहीं। ऊंच से ऊंच भगवान ही सद्गति दाता है। बाकी और सभी दुर्गति में पड़े हुये हैं इन्हों की महिमा कैसे हो सकती। महिमा देवताओं की गाती हैं या कलियुगी मनुष्यों की। देवता बनाने वाला तो एक ही बाप है। ऐसे2 रेसपान्ड भी यह कर सकते हैं जो समझते हैं। ठीक रेस्पान्ड न कर सकते हैं तो मुख की आब्रू चली जाती है। कहेंगे ब्रह्माकुमारियां देखो। हमारा कन्सट्रक्शन भी है, डिसट्रक्शन भी है। कन्सट्रक्शनकारी गरीब साथ, डिसट्रक्शन होता है हजारों से। ढेर हैं जिनको कहां भी भेजा नहीं जा सकता। खुद भी समझते हैं हम तो किसको समझायें न सकेंगे। जानते ही नहीं। अच्छा समझा नहीं सकते हैं तो फिर स्थूल काम। मिलिट्री में सब काम करने वाले होते हैं। गाया भी जाता है पढ़े आगे अनपढ़ें भरी ढोते हैं। न पढ़ेंगे न पढ़ायेंगे, न स्थूल काम करेंगे तो बाकी क्या काम के। गधा भी नहीं कहेंगे। गधा तो फिर भी काम करते हैं। उनके लिए उपमा नाम अच्छा है। पूछते हैं सब से अच्छे ते अच्छा क्या करना चाहिए? यह लक्ष्य बनने लिए। देखो मामा बाबा अन्यन्य क्या करते हैं। वह सीखो। इसमें पूछने की क्या दरकार है। आप भी समझ सकते हो। बाबा से पूछो होशियार ते होशियार कौन है, बाबा कहेंगे फलाने को पकड़ो। जो सर्विस रबुल ही नहीं उन से क्या सिखेंगे। वह तो और ही टाईम वेस्ट करेंगे। बाबा रोज़ समझाते रहते हैं अपनी उन्नति करनी है तो यही तुम बहुत अच्छी कर सकते हो। चित्र तो रखे हैं। हम ने 84 जन्म कैसे लिये हैं, यह अब समझ फिर दूसरों को भी समझाओ। कितना सहज है। यह बनना है इस पुरुषार्थ से। कल भक्ति में माथा टेकते थे। आज नहीं। क्योंकि नालेज मिल गई है। ऐसे बहुत आकर नालेज लेंगे जितना जास्ती तुम सेन्टर का चेराब डालेंगे तब बहुत समझेंगे। औरों को समझाना है। तो यह पुरुषार्थ करो। सुनने से ही खुशी का पारा चढ़ जायेगा। सच्ची सत्य नारायण की कथा यह है। भक्ति से तो गिरते ही जाते हैं। ज्ञान का पता ही नहीं। ऐसे भी नहीं कह सकते कृष्ण से ज्ञान मिलता है। फिर कब कैसे किसको मिला था। कुछ भी पता नहीं। तुमको बेहद का बाप समझाते हैं। बाप कहते हैं कल तुमको समझाये गया, राजाई की परिवह राजाई कहां की? यह तो खुद ही जानते हैं कि यह खेल है एक ही बाप सारे खेल का राज़ बताते हैं। हम कहते हैं बाबा आप तो बान्धेली हो ब्रह्मा-द्वारा में। आप को आना ही पड़े पतित दुनिया पतित शरीर में। ईश्वर की बहुत महिमा करते हैं। अब तो कहेंगे बाबा हम ने आप को बुलाया है। तो आप आ गये हो पुरानी दुनिया में। हमारी सर्विस कर रहे हो पतित से पावन बनाने। कल्प 3 हम को देवता बनाये आप चले जाते हो। यह कहानी है जैसे किहोशियार बच्चों के लिए। बाकी तो जैसे भूटू हैं। तो वह खुशनुमा होना चाहिए। बाप भी ड्रामा अनुसार सर्वेन्ट बना है। कोई/2 कितना तंग करते हैं। अपने को आत्मा समझ श्रीमत पर चलो। देहाभिमान छोड़ो। वहां शरीर भी नया मिलेगा। बाप कहते हैं इस पर विचार करो, रूबरू सामने है हम यहां आये हैं यह बनने लिए। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप गुडमार्निंग। नमस्ते।